Topic - Concept of 'Jiva' according to 'Jainism'
B.A. (Hon's) I
Paper - Ist

Question :- जैन दर्शन के जीव संबंधी अवधारणा पर प्रकाश डालें।

Ans:- भारतीय दर्शन में जिस सत्ता को साधारणतया आत्मा, सांख्य ने पुरुष, उसी सत्ता को जैन दर्शन जीव की संज्ञा से विभूषित किया है। जीव और आत्मा एक ही सत्ता के दो विभिन्न नाम हैं। जैन दर्शन में जीव को एक स्वतंत्र द्रव्य के रूप में स्वीकार किया गया है, जिसका मुख्य लक्षण चेतना है। इसलिए जैनियों ने जीव की परिभाषा देते हुए कहा है कि "चेतना लक्षणो जीवः।" अर्थात् - "Consciousness is regarded as the essence of the soul." चेतना के अभाव में जीव की कल्पना नहीं की जा सकती है।

जैन का जीव विचार न्याय - वैशेषिक के आत्मा विचार से भिन्न है। क्योंकि न्याय - वैशेषिक दर्शन चैतन्य को आत्मा का आगन्तुक लक्षण मानता है। इसके अनुसार आत्मा स्वभावतः अचेतन है। लेकिन आत्मा में चेतना का संचार तब होता है, जब इसका संबंध इन्द्रियों, शरीर तथा मन आदि से होता है। परन्तु जैन दर्शन ने चेतना को आत्मा का मूल लक्षण माना है।

जैन दर्शन के अनुसार जीव स्वयं प्रकाशवान है तथा दूसरी वस्तुओं को भी प्रकाशित करता है। जीव का स्वरूप शरीर के स्वरूप से भिन्न है। जीव नित्य है, परन्तु शरीर विनाशशील है जीव आकार विहिन है, जबकि शरीर आकार युक्त है। जीव ज्ञाता, कर्त्ता एवं भोक्ता है। जीव को ज्ञाता इसलिये कहा गया है, कि वह भिन्न-2 विषय का ज्ञान प्राप्त करता है, परन्तु स्वयं ज्ञान का विषय नहीं है। इसे कर्त्ता इसलिये कहा गया है, क्योंकि जीव सांसारिक कर्मों में भाग लेता है। जीव को भोक्ता इसलिये कहा गया है, क्योंकि वह अपने कर्मों का फल स्वयं भोगने के कारण सुख - दुःख की अनुभूति करता है। जैन दर्शन के अनुसार जीव एक नहीं बल्कि अनेक है।

जैन दर्शन के अनुसार जीव स्वभावतः अनंत है। इसमें चार प्रकार की पूर्णतायें पायी जाती है, जिसे अनन्त चतुष्टय कहा जाता है। जैन दर्शन के अनुसार :- "The soul intrinsic ~~......~~ nature possesses infinite knowledge, infinite faith, infinite bliss infinite power." जैन दर्शन के जीव संबंधी विचार सांख्य के पुरुष संबंधी विचार से विरोधात्मक संबंध

Scanned with CamScanner

रखता हुआ प्रतीत होता है। क्योंकि सांख्य ने आत्मा को अकर्ता माना है, जबकि जैन ने आत्मा को कर्ता माना है। जैनियों के अनुसार जीव के इन विशेषताओं के अलावा यह भी विशेषता है, कि वह अमूर्त होने के बावजूद भी मूर्त आकार ग्रहण करता है। इसलिए जीव को अस्तिकाय द्रव्यों के वर्ग में रखा गया है। जीव के इस स्वरूप की तुलना प्रकाश से की गयी है। जिस तरह से प्रकाश का कोई आकार नहीं होता, लेकिन जिस कमरे को आलोकित करता है, उसी के आकार प्रकार ग्रहण करता है। उसी तरह से जीव प्रकाश के तरह जिस शरीर में निवास करता है, उसी शरीर के अनुरूप अपना आकार ग्रहण करता है। जैसे — हाथी में निवास करने वाले आत्मा का रूप बृहत् तथा चींटी में निवास करने वाले आत्मा का रूप सूक्ष्म होता है।

जैन दर्शन सम्पूर्ण जगत को दो नित्य द्रव्यों में बाँटता है - जीव और अजीव। जीव दो प्रकार के होते हैं — मुक्त जीव तथा बद्ध जीव। मुक्त जीव उन आत्माओं को कहा जाता है जो मोक्ष प्राप्त कर चुका है, तथा बद्ध जीव उन आत्माओं को कहा जाता है जो बंधन ग्रस्त है। बद्ध जीव का विभाजन दो प्रकार के जीवों में किया है - त्रस और स्थावर। स्थावर जीव वह है, जो गतिहीन है, जो वायु, अग्नि, पृथ्वी, जल एवं वनस्पति में निवास करता है, तथा जिसके पास एक ज्ञानेन्द्रियाँ है - स्पर्श। त्रस जीव वे हैं, जो गतिशील हैं, वे विभिन्न प्रकार के होते हैं — कुछ त्रस जीव दो ज्ञानेन्द्रियों के होते हैं, जैसे घोंघा, सीप आदि — स्पर्श, स्वाद। कुछ त्रस जीव तीन ज्ञानेन्द्रियों के होते हैं - स्पर्श स्वाद एवं गंध, जैसे — चींटी। कुछ त्रस जीव चार ज्ञानेन्द्रियों के होते हैं — स्पर्श, स्वाद, गंध एवं दृष्टि, जैसे — मक्खी, भौंरा। कुछ त्रस जीव पाँच ज्ञानेन्द्रियों के होते हैं - स्पर्श, स्वाद, गंध दृष्टि एवं शब्द, जैसे - मनुष्य, पशु इत्यादि।

जैन दर्शन के अनुसार उपर्युक्त सभी जीवों में चेतन्य की मात्रा है। अब यह उठता है, कि क्या सभी जीवों में चैतन्य की मात्रा समान है? जैनियों के अनुसार कुछ जीवों में चेतना कम विकसित होती है, तो कुछ जीवों में चेतना अधिक विकसित होती है। सबसे अधिक विकसित चेतना मुक्त जीवों में होती है, तथा सबसे कम विकसित चेतना स्थावर जीवों में होती है।

जैन दर्शन के जीव संबंधी विचार पाश्चात्य

दार्शनिक Descarts के Soul के स्वरूप से भिन्न है, क्योंकि

जैन दार्शनिक के अनुसार शरीर के आकार में अन्तर होने से जीव के आकार में भी भिन्न-2 होते हैं। लेकिन Descarts के अनुसार- "Conscious-ness and extension are opposite attribute." देकार्ते के अनुसार extension केवल जड़ पदार्थ में होता है और Conscious-ness केवल soul में होता है। जड़ और आत्मा में भिन्नता के कारण विस्तार और चेतना आपस में भिन्न है।

जैन दर्शन का यह विचार कि जीव का विस्तार संभव है, अन्य दार्शनिकों को भी मान्य है। Plato, Alxgender ने भी माना है कि जीव के विस्तार और जड़ द्रव्य के विस्तार में भेद है। जीव का विस्तार शरीर को घेरता नहीं, बल्कि शरीर के समस्त भाग में इसका अनुभव होता है, और प्रत्येक भाग में चेतना का ज्ञान होता है, इसके विपरीत जड़ द्रव्य स्थान घेरता है।

जैन दर्शन जीव के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिये कुछ प्रमाण भी प्रस्तुत किया है, जो निम्नलिखित है-

(i) जैन दर्शन के अनुसार शरीर चैतन्य का कारण नहीं हो सकता है, लेकिन ऐसा चार्वाक मानता है। जैनियों का कहना है कि अगर चैतन्य का कारण शरीर होता तो निद्रा या मूर्छा की अवस्था में भी शरीर विद्यमान रहता है, परन्तु चैतन्य का अभाव रहता है। इससे प्रमाणित होता है कि चैतन्य का कारण शरीर नहीं हो सकता है, बल्कि चैतन्य का कारण जीव है। यदि शरीर का गुण चैतन्य होता तो शरीर के परिवर्तन के साथ-2 चैतन्य में भी परिवर्तन होता। परन्तु ऐसा देखने को नहीं मिलता।

(ii) किसी वस्तु का ज्ञान उसके गुणों के द्वारा होता है, अर्थात जब हम किसी द्रव्य के गुण को देखते हैं, तो कहते हैं कि उस द्रव्य को देख रहे हैं, जैसे- गुलाब के रंग को देखकर कहते हैं कि गुलाब को देख रहे हैं, उसी प्रकार आत्मा के गुणों को देखकर हमें आत्मा का प्रत्यक्षानुभूति होती है। चेतना, सुख-दुःख, स्मृति आदि गुणों के अनुभव होने से आत्मा का प्रत्यक्ष अनुभव होता है।

(iii) जिस प्रकार किसी मशीन को चलाने के लिए एक चालक की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार शरीर को चलाने के लिये जीव या आत्मा की आवश्यकता होती है।

(iv) इन्द्रियाँ ज्ञान के साधन हैं, परन्तु ये अपने आप ज्ञान नहीं दे सकते। कोई सत्ता अवश्य है, जो इन ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है, वह जीव या आत्मा है।

(v) जिस प्रकार जड़ पदार्थों के निर्माण के लिए किसी उपादान

Scanned with CamScanner

कारण के अतिरिक्त एक निमित्त कारण की आवश्यकता पड़ती है, शरीर भी जड़ द्रव्यों के समूह से बना है। प्रत्येक शरीर के लिए विशेष प्रकार के पुद्गल कण की आवश्यकता पड़ती है, ये पुद्गल कण शरीर के निर्माण के लिए पर्याप्त नहीं है। इसको रूप और आकार देने के लिए निमित्त कारण की आवश्यकता होती है। वह निमित्त कारण जीव है, इससे प्रमाणित होता है कि जीव के अभाव में शरीर का निर्माण संभव नहीं है।

Criticism:- इस प्रकार हम देखते है कि जैनियों ने जीव के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए विभिन्न प्रमाण प्रस्तुत किया है, लेकिन फिर भी आलोचकों ने जैन के जीव विचार की आलोचना की है —

(i) आलोचकों का कहना है कि यदि जैन के जीव intrinsically सभी समान है और सभी infinite knowledge, infinite faith, infinite Power, infinite bliss को Posses करते है, तो ये अलग-2 अस्तित्ववान होंगे।

(ii) आलोचकों का कहना है कि जैन दर्शन के अनुसार जीव और शरीर related है। परन्तु प्रश्न उठता है कि जीव और शरीर संयुक्त कैसे है? जहाँ जीव infinite knowledge, infinite Power, faith, bliss से युक्त है, जबकि शरीर इनसे रहित है, तब जीव कैसे मुक्त हो सकता है। साथ ही साथ जीव को बंधन ग्रस्त नहीं होना चाहिए।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद भी यह निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि जैन दार्शनिकों ने जीव विचार को बड़े ही तार्किक ढंग से रखा है। जीव के अनेकता में विश्वास करने के कारण ही जैन दर्शन अनेकवाद का समर्थक हो जाता है।